प्रातः क्लास 23-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों से रूहानी बाप पूछ रहे हैं मीठे2 बच्चों अपना घर शान्तिधाम याद है ना। भूल तो नहीं गये हो। अभी 84 का चक्र पूरा हुआ, कैसे पूरा हुआ यह भी तुम समझ गये हो सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक। ऐसे और कब कोई पूछ नहीं सकते। मीठे2 लाडले बच्चों से बाप पूछते हैं अभी घर जाना है ना। घर चल कर फिर सुखधाम आना है। यह सुखधाम तो नहीं है। यह है पुरानी दुनिया दुःखधाम। हेल। स्मृति में है नावह है शान्तिधाम। सुखधाम। अभी इस दुःखधाम से मुक्त हो जा ना है मुक्तिधाम। मुक्ति अथवा शान्तिधाम जैसे कि सामने खड़े हैं। वह है घर। फिर तुम नई विश्व में आवेंगे जहां पवित्रता सुख शान्ति सभी होंगी। यह तो स्मृति में है ना। ज्ञान भी है। बाप को भी पुकारते हैं हे पतित-पावन इस पतित दुनिया से हमको ले चलो। इसमें बहुत दुःख है। हमको सुख में ले चलो। स्मृति में आता है। उसको कहा जाता है स्वर्ग। स्वर्ग को सभी याद करते हैं। शरीर छोड़ा कहेंगे स्वर्ग पधारा। लिफ्ट फार हैविनली एबोड। किसने लिफ्ट किया? आत्मा ने। शरीर तो नहीं जाता है। आत्मा ही जाती है। अभी तुम बच्चे ही सुखधाम शान्तिधाम को जानते हो। और कोई भी नहीं जानते। तुम बच्चों की बुधि में नालेज है शान्तिधाम क्या है, सुखधाम क्या है। तुम सुखधाम में थे। फिर अब दुःखधाम में आये हो। सेकण्ड मिनट, घंटे, दिन, मास, वर्ष बीतते गये। अभी 5000 वर्ष में बाकी कुछ दिन रहे हैं। बाप बच्चों को स्मृति दिलाते हैं। बहुत सहज बात है। इसमें मुंझने की तो दरकार हीनहीं। आत्मा 84 जन्म कैसे लेती है यह भी किसको पता नहीं है। लाखों वर्ष की बात तो किसको याद भी न रह सके। यहतो है ही 5000 वर्ष की बात। व्यापारी लोग भी स्वस्तिका चौपड़ी पर निकालते हैं। उसको गणेश कह देते हैं। गणेश को हाथी का सूढ़ दिखाते हैं। मनुष्य कितना पैसा खर्च करते हैं यह चित्र आदि बनाने। इसको कहा जाता है वेस्ट आफ मनी। वेस्ट ऑफ टाईम, वेस्ट आफ इनर्जी। तुम्हारे में कितनी ताकत थी। वह दिन प्रति दिन कम होती गई है। जैसे पेट्रोल मोटर से कम होता जाता है। अभी तो तुम बहुत कमजोर हो गये हो। 5000 वर्ष पहले भारत क्या था। अथाह सुखी था। भारत क्या कहलाता था। कितना जबरदस्त धनवान था। यहराज्य इन्होंने कैसे पाया? राजयोग सीखे थे। इसमें लड़ाई आदि की बात ही नहीं। इनको कहा जाता है ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र। और कोई स्थूल बात नहीं है। ज्ञान के अस्त्र शस्त्रहैं। ज्ञान-विज्ञान। याद और ज्ञान कितने जबरदस्त अस्त्र-शस्त्रहैं। सारे विश्व पर तुम राज्य करते हो। देवताओं को कहा जाता है अहिंसक। अभी तुम बच्चों को मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा मिलरही है। तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद हम बेहद के बाप से बेहद का वरसा लेते हैं। यह आत्मा की बात है। इसमें स्थूल लड़ाई आदि की बात नहीं। आत्मा पतित बनी है इसलिये पावन होने लिये बाप को बुलाते हैं। तो अब बाप कहते हैं हे मीठे बच्चे अभी घर जाना है। यह है जीवात्माओं की दुनिया। जब तुम अपने स्वीट होम में हो तो वह है आत्माओं की दुनिया। उनको जीवात्माओं की दुनिया नहीं कहेंगे। यह घड़ी2 स्मृति में आना चाहिए हम दूर देश के रहने वाले हैं। हम आत्माओं का घर है ब्रह्माण्ड। यह भी बुधि में है हम वहां रहते हैं। इस आकाशतत्व से पार। जहां सूर्य-चांद भी नहीं होते। वहां के हम रहने वाले हैं। यहां पार्ट बजाने आये हैं। 84 का पार्ट बजाते हैं। सभी तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। आहिस्ते2 ऊपर से उतरते आते हैं। हम आलराउण्डर हैं। सभी काम करने वाले को आलराउन्ड कहा जाता है। तुमभी आलराउन्डर हो। आदि से अन्त तक तुम्हारा पार्ट है। यह भी जानते हो इस चक्र का अब अन्त है। तो भी ऊपर से आते रहते हैं। बहुत बचे हुये हैं। जो आते रहते हैं। बुधि को पाते रहते हैं। मनुष्य है बिल्कुल बेसमझ। उन्हों को समझदार बनाया जाता है। तुम अपने को बेसमझ कह, इन देवताओं को समझदार समझते हो। बाप ने तुम बच्चों को हम सो का अर्थ भी समझाया है। वह लोग तो कह देते हम आत्मा सो परमात्मा। उनको तो ड्रामा के आदि मध्य अन्त डियुरेशन आदि का भी कुछ पता नहीं है। तुमको बाप ने समझाया है। इस शरीर में अभी तुम ब्राह्मण हो। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिव बाबा ने तुमको एडाप्ट किया है। पढ़ाते हैं। यह तो यादरहना चाहिए ना। भगवानुवाच, हमको पढ़ा रहे हैं। उच्च ते उच्च भगवान है। सभी आत्मायें इसधाम में पिरोये हुये हैं। अभी तुम जानते हो हम सो शुरू2 में—

देवता थे। फिर हम सो क्षत्री धर्म में आयेअर्थात सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी मे आये। इतने जन्म लिये। यह सभी पता होना चाहिए। यहनालेज पहले तुम्हारे में बिल्कुलनहीं थी। अभी बाप ने समझाया है। इतने जन्म हम हम सूर्यवंशी में थे फिर चन्द्रवंशी वैश्यवंशी और शुद्रवंशी बने। यह बाजोली है। अभी फिर शुद्र से ब्राहमण बने हैं। ब्राहमण से ही देवता बनेंगे। विराट रूप दिखलाते हैं ना। तुम्हारी बुधि में सारा ज्ञानहै। कैसे हम नीचे उतरते 84 जन्म लेते हैं। ब्राहमण कुल में आयेफिर डीटी डिनायस्टी में आये। अभी तुम हो ब्राहमण चोटी। चोटी सभी से उच्च होता है। तुम्हारे जैसा उच्चेकौन सडावे(कहलावे)। भगवान बाप आकर तुमको पढ़ा रहे हैं। तुम कितने भाग्यशाली हो। अपनेभाग्य का कुछ सराह तोकरो। बाहर में तो सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं। यह तो हैनिराकार बाप। यह बाप कल्प2 आकर एक ही नालेज देते हैं, पढ़ाते हैं। पढ़ाई तो हरेक पढ़ते हैं ना। बैरीस्टरी की नालेज पढ़2 करबैरीस्टर बनेंगे ना। वह सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते आते हैं। अभी यह है भगवानुवाच। मनुष्य को तो भगवानकहा नहीं जाता। वह तो है निराकार। यहां आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। पढ़ाई न सूक्ष्मवतन में न मूल वतन में होती है। पढ़ाई यहां ही होती है। इसमें मुंझने की तो बात ही नहीं। स्कूलमें कब स्टुडन्ट्स कहेंगेक्या हम मुंझते हैं। हमको निश्चय नहीं होता। पढ़ाई तोपढ़कर अपनाहिस्सा लेते हैं। यह ल०ना० सतयुग आदि में विश्व का मालिक कैसे बने? जरूर बाप द्वारा ही बने। बाप बैठबच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चे यह 84 का चक्र है। बाप तो सच्च बतावेंगे ना। भगवान कोई रांग थोड़ेही बता सकते। बड़ा भारी इम्तहान है। इस समय तो है प्रजा का प्रजा पराज्य। राजा-रानी है नहीं। सतयुग में थे। अभी कलियुग अन्त में है नहीं। इसको कहा जाता है पंचायती राज्य। गीता में लिख दिया है कौरव और पाण्डव। रूहानी पण्डे तो तुम हो ना। सभी को रूहानी घर का रास्ता बताते हो। वह है तुम आत्माओं का रूहानी घर। रूह जिस द्वारा पार्ट बजातीहै। यह बातें तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते। ऋषि-मुनि आदि कोई भी न रचयिता को न रचना के आदि मध्य अन्त को जानते थे। लाखों वर्ष कह देते हैं परन्तु उनका भी कोई पूरा हिसाब किताब नहीं है। आधा2 भी हो न सके। पूरा आधा दुःखधाम फिर पूरा आधा सुखधाम। अभी है दुःखधाम। रावण राज्य। रावण को दस सीस दिखाते हैं। बाप ने समझाया है 5 विकार स्त्री के 5पुरुष के हैं। गदहे मिसल बन पड़े हैं। भार ढोते2 थक गये हैं। इसलिये अभी पुकारते हैं बाबा इस छी छी दुनिया से चलो। यह है पतितदुनिया। बिग्स और बायसलेस नाम है ना। यह बड़ी समझ की बातें हैं। बाप कितना उच्चे ते उच्चा है। परन्तु कितना साधारण है। यहां कोई बड़े आदमीआफीसर्स आदिसे मिलते हैं तो उनका कितना रिगार्ड रखते हैं। इन्द्रा गांधी कहां जाती है तो ढेर के ढेर मनुष्य खड़े हो जाते हैंदीदार करने। पतित दुनिया में पतितमनुष्य पतितों का ही दीदार करते रहते। पावनतो है ही गुप्त। बाहर से दिखाई कुछ भी नहीं पड़ता। बाप को कहा जाता है नालेजफुल, विलीसफुल। सभी बातों में फुल है। इसलिये उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। हरेक मनुष्य के पोजीशन की महिमा अलग होती है। वजीर को वजीर, प्राईम मिनिस्टर को प्राईम मिनिस्टरकहेंगे। यह फिर ऊंच ते ऊंच है भगवान। सभी से ऊंच है। गायन है ना" सगल सुतल धारी....'हम सभी आत्मायें उस बाप के रस्सी में पिराये हुये हैं। फिर नम्बरवार आते हैं। रूद्र माला है बेहद की। नम्बरवार आते हैं इसलियेकहते हैं सारी सृष्टि की आत्मायें पिरोये हुये हैं। सबसे बड़ा पोजीशन है निराकार बाप का। जिसके हम सभी बच्चे हैं। वहां हम सभी बाप के साथ परमधाम में कैसे रहते हैं। वह है घर। यहां सभी को अपना2पार्ट मिला हुआ है। कोई एक जन्म का भी पार्ट बजाते हैंफिर वापिस जाना है। बाप समझाते हैं यह मनुष्य सृष्टि का वैरायटी झाड़ है। एक न मिले दूसरे से। आत्मा तो एक ही है। बाकी शरीर एक न मिले दूसरे से। एक नाटक भी दिखाते हैं जिसमें एक जैसे दो सिकल बनाते हैं जिसमें मुंझ जाते हैं कि पता नहीं हमारा पति कौन यह है या यह। यह तो बेहद का खेल है। इसमें वैराईटी है। एक न मिले दूसरे से। हरेक के फिचर्स अलग हैं। उम्र भल एक जैसी होपरन्तु फिचर्स एक हो न सके। हर जन्म में फिचर्स बदल जाते हैं। कितना बड़ा बेहद का नाटक है। तो उनको जानना चाहिए ना। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुधि में है। हरेक का ड्रामा —

23-10-68

3

में जो पार्ट हैवही बजावेंगे। ड्रामा में रीपलेस हो नहीं सकता। वेहद का ड्रामा है ना। जन्म लेते रहते हैं। सभी के फिचर्स अलग2 हैं।
- - - - - - - - - कितने वैराईटी फिचर्स हैं। यह नालेज सारी बुधि से समझने की है। कोई किताब आदि है नहीं। गीता का भगवान हाथ में गीता ले आया क्या। वह तो ज्ञान का सागर था ना। पुस्तक थोड़ेही ले आया। पुस्तक तो भक्ति मार्ग में बनते हैं। तो यह सभी ड्रामा में नूंध है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। तुम बच्चों को तो सभी समझा दिया है। चक्र पूरा हो फिर नये सिरे शुरु होगा। अभी तुम पढ़ रहे हो। बाप को भी तुम जान गये हो। रचयिता को भी जान गये। तो रचना को भी जान गये हो। मूलवतन से यहां आते हैं पार्ट बजाने। स्टेज कितनी बड़ी है। इनका कोई माप नहीं हो सकता। कोई भी पहुंच नहीं सकते। इसलिये बेअन्त गाया हुआ है। आगे इतनी कोशिश नहीं करते थे। अभी कोशिश करते हैं। सांयस भी अभी है। फिर कब शुरु होगी जब उन्हों का पार्ट होगा। तो इतनी सभी बातें शास्त्रों में थोड़ेही हैं। शास्त्रों में तो सभी रांग ही रांग हैं। सुनाने वाले के बदली सुनने वाले का नाम डाल दिया है। यह काली आत्मा वह गोरी आत्मा। काली आत्मा इन द्वारा सुनकर फिर गोरी बनती है। नालेज से कितना ऊंच पद मिलता है। यह है गीतापाठशाला। कौन पढ़ाते हैं। भगवान राजयोग सिखलाते हैं। अमर पुरी के लिये। इसलिये इनको अमरकथा भी कहा जाता है। जरूर संगम पर ही सुनाई होगी। जिन्हों ने कल्प पहले पढ़ा हैवही आकर पढ़ेंगे और नम्बरवार पद पावेंगे। तुम यहां कितना बारी आये हो? अनगिनत। कोई पूछे यह नाटक कब शुरु हुआ है। नहीं। यह तो अनादि चला आ रहा है। गिनती की बात हो नहीं सकती। पूछने का ख्याल भी नहीं होता। तुम कोई से पूछो शास्त्र कबसे शुरु हुई। कह देंगे परम्परा से। शास्त्र कब शुरु होती है यह ज्ञान तो है नहीं। भक्ति मार्ग कब शुरु होता है, कैसे हमने भक्ति की है। पहले2 होती है परमपिता परमात्मा शिव की। फिर सूर्यवंशी देवताओं की। चन्द्रवंशी की। फिर पूजा भी व्यभिचारी बन जाती है। बुतप्रस्ती बन पड़ते हैं। मनुष्यों की पूजा, जानवरों की पूजा, करने लग पड़ते हैं। बाकी इतनी भुजाएं आदि कोई होती नहीं हैं। ममा देवी को कितनी भुजाएं दी है, जैसे ब्रह्मा को भी बहुत भुजाएंदे देते हैं। ब्राहमण बहुत हैं ना। यह भुजाएं सभी ब्राहमणों की है। शास्त्रों में सभी है भक्ति की कहानियां जो पढ़ते रहते हैं। यह थोड़ेही कहते हैं हम कृष्ण हैं। न संस्कृत ही पढ़ते हैं। सतयुग में यह अनेक भाषाएं आदि कुछ भी नहीं होती। एक धर्म, एक भाषा, एक राज्य की तुम स्थापना कर रहे हो। वह लोग तो शान्तिस्थापन के प्राईज देते रहते हैं। शिव बाबा तुमको सारे विश्व में शान्ति स्थापन करने की कैसे राय देते हैं। उनको तुम क्या प्राईज देंगे। वह तो और ही तुमको प्राईज देते हैं। लेते नहीं हैं। यह समझने की बातें हैं ना। कल की बात है जब कि इन्हों का राज्य था। अभी तो अनेक हो गये हैं। रहने की जगह ही नहीं। वहां तो दसरे तीसरे मंजिल बनाने की भी दरकार ही नहीं। काठियां आदि की भी दरकार नहीं। वहां तो सोने चांदी के मकान बनते हैं। सांयस के जोर सेझट कमकान बन जाते हैं। यहां सांयस से सुख भी है तो दुःख भी है। सारी खलास हो जावेंगी। इनको कहा जाता है फॉल आफ एम्पियर। माया का कितना पाम्प है। साहुकारों के लिये तो जैसे यह स्वर्ग है। इसलिये वह तुम्हारी बात भी नहीं सुनते। बाप बैठ बच्चों को सुनाते हैं हम तुमको घर ले जाने आये हैं। वह है मुक्तिधाम। जहां सभी आत्माएं रहती हैं। फिर नई दुनिया है सुखधाम। कल की बात है स्वर्ग था ना। कैसे स्थापन हुआ यह भी तुम जानते हो। आगे तुम भी नहीं जानते थे। कोई भी नहीं जानता था। यहां तो बाप तुमको डायरेक्ट पढ़ाते हैं। बाहर में तो फिर बच्चे पढ़ाते हैं। मित्र-सम्बन्धी आदि भी याद आते रहते हैं। यहां तो बाप बैठ समझाते हैं। दिन प्रति दिन तुम याद की यात्रा में पक्के होते जावेंगे। फिर तुमको कुछ भी याद नहीं आवेगा। सिर्फ घर और राजधानी याद आवेंगे। फिर यह नौकरी आदि थोड़ेही याद आवेगा। मरेंगे ऐसे जैसे कि बैठे2 हार्टफेल होते हैं। दुःख की बात ही नहीं रहेगी। हास्पीटल आदि तो कुछ भी नहीं रहेंगी। मुक्ति-और जीवनमुक्ति का एक सेकण्ड में वरसा मिलता है। बाप को जाना और स्वर्ग के मालिक बने। तुम्हारा तो हक है ना। सभी का नहीं कहेंगे। सभी स्वर्ग में आवेंगे क्या। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।